



न्यूज़बीफ

धोनी सहित ये क्रिकेटर अपने डेब्यू मैच में खाता भी नहीं खोल पाये थे



मुम्बई। भारतीय क्रिकेट में पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी सहित कुछ ऐसे भी क्रिकेटर हुए हैं जो अपने टी20 अंतरराष्ट्रीय के डेब्यू मैच में तो खाता भी नहीं खोल पाये पर इसके बाद इन खिलाड़ियों ने अपने प्रदर्शन से इतिहास रच दिया। इस सूची में धोनी के अलावा के एल राहुल से लेकर अभिषेक शर्मा तक है। इस सूची में पहला और शायद सबसे हेरन वाला नाम धोनी का है। जिन्होंने देश को पहला टी20 विश्व कप दिलाया और अनगिनत रिकार्ड अपने नाम किए, उनका टी20 इंटरनेशनल डेब्यू भी बिना रन बनाए आउट होने की घटना से जुड़ा है। साल 2006 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ अपने पहले टी20 मैच में, धोनी सिर्फ 2 गेंदें खेलकर बोल्ड हो गए थे। यह घटना इस बात का प्रमाण है कि शुरुआती झटके किसी महान करियर की राह में बाधा नहीं बनते, बल्कि कभी-कभी तो एक प्रेरक बिंदु बन जाते हैं। अगला नाम प्रतिभाशाली बल्लेबाज केएल राहुल का है, जो अपने टी20 इंटरनेशनल करियर की शुरुआत में गोल्डन डक का शिकार हुए थे। साल 2016 में जिम्बाब्वे के खिलाफ अपने पहले टी20 मुकाबले में, राहुल पहली ही गेंद पर आउट हो गए थे। हालांकि, उनकी यह खराब शुरुआत उनके टी20 करियर को परिभाषित नहीं कर सकी। इसके बाद उन्होंने इस फार्मेट में कई शानदार पारियां खेलीं, शतक जड़े और भारतीय टीम के अहम सदस्य बने। हाल ही में अपनी आक्रमक बल्लेबाजी से आईपीएल में धूम मचाने वाले अभिषेक शर्मा भी इस सूची में शामिल हैं। जिस अभिषेक की विस्फोटक बल्लेबाजी से आज दुनिया भर के गेंदबाज खोफ खाते हैं, उन्हें भी अपने टी20 इंटरनेशनल डेब्यू में शून्य पर आउट होने का अनुभव हुआ। साल 2024 में जिम्बाब्वे के खिलाफ टीम इंडिया के लिए डेब्यू करते हुए, अभिषेक शर्मा 4 गेंदें खेलने के बावजूद अपना खाता नहीं खोल पाए और बिना रन बनाए पवेलियन लौट गए।

नार्विया आस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज से वापसी के लिए तैयार

जोहान्सबर्ग। दक्षिण अफ्रीकी तेज गेंदबाज अनरिक नार्विया करीब तीन साल बाद टेस्ट क्रिकेट में वापसी के तैयार हैं। नार्विया आस्ट्रेलिया के खिलाफ 9 अक्टूबर से शुरू होने वाली तीन मैचों की टेस्ट सीरीज में खेलते हुए दिखेंगे। 32 वर्षीय नार्विया ने मार्च

2023 में वेस्टइंडीज के खिलाफ अंतिम बार टेस्ट खेला था। इसके बाद से, उनका ध्यान मुकुट रूप से टी20 क्रिकेट पर रहा पर अब वह फर्स्ट-क्लास क्रिकेट में फिर वापसी कर रहे हैं। नार्विया ने कहा कि वह काफी समय से लाल गेंद से अपने कोशल को बेहतर बनाने, धीरे-धीरे गेंदबाजी का भार बढ़ाने और ओवरों की संख्या बढ़ाने पर काम कर रहे थे। उनकी तैयारी में अपने गेंदबाजी एक्शन को मजबूत और टिकाऊ बनाना भी शामिल है, जिसके लिए उन्होंने कोच पीट बोथा के साथ मिलकर काफी काम किया है। नार्विया ने अपने गेंदबाजी तकनीक में भी सुधार किया है, ताकि पांच दिवसीय क्रिकेट के लिए उनका एक्शन भरोसेमंद बन सके। अप्रैल 2023 के बाद से किसी प्रतिस्पर्धी मैच में पांच से ज्यादा ओवर न फेंकने के बावजूद, नार्विया टेस्ट क्रिकेट में लौटने के लिए बेहद उत्साहित हैं। उन्होंने कहा कि अगर उन्हें दोबारा टेस्ट कैप पहनने का मौका मिला तो वह बहुत खुश होंगे, क्योंकि बचपन से ही टेस्ट क्रिकेट वह फार्मेट है जिसे हर खिलाड़ी खेलना चाहता है।

एशियन गेम्स: गर्व के पदक का रंग एक, पर राज्यों में इनाम अलग-अलग; एक जैसे मेडल जीतने पर भी राशि में फर्क

मुम्बई। जापान में एशियाई खेलों में देश के लिए एक जैसा पदक जीतकर लौटें खिलाड़ियों के लिए राज्यों की इनामी राशि का फर्क अब महज नीति का एक पन्ना नहीं, दिल पर लगी चोट बन गया है। नागोया में तिरंगा सबके लिए एक ही ऊंचाई पर लहराया गया, गले में पदक की चमक एक जैसी थी। मगर वतन लौटते ही वह किसी राज्य में करोड़ों का हो गया तो किसी राज्य में चंद लाख में सिमट गया। इकलौते पदकधारी की कसक बाविसग के 90 किलो भार दर्ग में कांस्य विजेता कपिल पोखरिया उतरारखंड के इकलौते पदकधारी हैं। पर राज्य की खेल नीति के मुताबिक उनके हिस्से महज 15 लाख रुपये आएंगे। वह कहते हैं कि पड़ोसी राज्य यूपी अपने स्वर्ण विजेताओं को तीन करोड़, रजत विजेताओं को डेढ़ करोड़ और कांस्य विजेताओं को 75 लाख रुपये दे रहा है। कपिल की आवाज में शिकायत कम, कसक ज्यादा है। उनका सवाल सीधा है, जो पदक यूपी के खिलाड़ी के गले में 75 लाख का है, वही उतरारखंड के खिलाड़ी के गले में 15 लाख का कैसे हो गया। 44 साल बाद स्वर्ण दिलाने वाली लालरेमसियामी को मिलेंगे सिर्फ 40 लाख महिला हाकी टीम ने 44 साल बाद देश की झोली में स्वर्ण डाला। इस जीत की नायिकाओं में शामिल मिजोरम की लालरेमसियामी को राज्य सरकार ने 40 लाख रुपये दिए हैं। सियामी इसी में संतोष ढूंढ़ लेती हैं, क्योंकि एशियाइ पदक जीतने के बावजूद पहले उन्हें राज्य से एक रुपया तक नहीं मिला था।

नईदुनिया

पाक महिला क्रिकेटर कायनात अब रैफरी की जिम्मेदारी निभाएंगी

लाहौर पाकिस्तान महिला क्रिकेट टीम की अनुभवी तेज गेंदबाज कायनात इम्तियाज खेल को अलदिया कहने के बाद अब रैफरी की भूमिका निभाएंगी। इस क्रिकेटर का कहना है कि वह खेल से जुड़ी रहना चाहती है। वह इसी लिए अपनी मां सलीमा इम्तियाज की तरह ही मैच रेफरी के रूप में खेल में अपनी नई पारी की शुरुआत करेंगी। यह एक अनूठा और प्रेरणादायक अध्याय है जहां एक बेटी अपनी मां द्वारा स्थापित एक विरासत को आगे बढ़ा रही है। 34 वर्षीय कायनात ने पाकिस्तान के लिए 19 एकदिवसीय और 21 टी20 मैच खेले हैं। उन्होंने अक्टूबर 2010 में पोटचेफस्ट्रम में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ अपना टी20 डेब्यू किया था और इसके ठीक एक साल बाद बांग्लादेश के

फातुल्लाह में आयरलैंड के खिलाफ अपना

पहला एकदिवसीय मैच खेला था। कायनात ने अपने अंतरराष्ट्रीय करियर का समापन एकदिवसीय में 10 विकेट और टी20 में 8 विकेट के साथ किया। मैदान पर उनकी उपस्थिति और तेज गेंदबाजी ने कई मौकों पर पाकिस्तान के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया कायनात के करियर की उपलब्धियां भी काफी हैं। वह चीन (2010) और दक्षिण कोरिया (2014) में आयोजित एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाली पाकिस्तानी टीम का महत्वपूर्ण हिस्सा थीं। इसके अलावा, उन्होंने 2017 महिला क्रिकेट विश्व कप में पाकिस्तान का प्रतिनिधित्व किया, जहां उन्होंने चार मैच खेले, और 2022 के कामनवेल्थ गेम्स में भी पाकिस्तानी टीम में शामिल थीं। उनका आखिरी

अंतरराष्ट्रीय मैच जनवरी 2023 में ब्रिस्बेन के गाबा मैदान पर आस्ट्रेलिया के खिलाफ एकदिवसीय मुकाबला था, जिसके बाद उन्हें राष्ट्रीय टीम में मौका नहीं मिल सका।

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा से पहले ही कायनात ने रेफरी के तौर पर अपनी नई भूमिका में कदम रख दिया था। उन्होंने इसी साल अगस्त और सितंबर में कराची में आयोजित पीसीबी नेशनल विमेंस अंडर-19 टूर्नामेंट के दौरान मैच रेफरी की जिम्मेदारी संभाली थी। यह कदम उनकी मां के प्रेरणादायक सफर से गहराई से जुड़ा है। गौरतलब है क कायनात की मां, सलीमा इम्तियाज, एक प्रतिष्ठित मैच अधिकारी रही हैं। वह 2024 में आईसीसी के इंटरनेशनल डेवलपमेंट पैनल में शामिल होने वाली पाकिस्तान की पहली महिला

अंपायर बनी थीं। सलीमा ने साल 2008 में पीसीबी महिला पैनल के साथ अंपायरिंग शुरू की थी और तब से उन्होंने 9 महिला एकदिवसीय और 69 महिला टी20 मैचों में अंपायरिंग की है। उन्हें आईसीसी महिला टी20 विश्व कप में अंपायरिंग करने वाली पहली पाकिस्तानी महिला अंपायर होने का भी गौरव प्राप्त है।कायनात का यह निर्णय सिर्फ उनके खेल करियर का अंत नहीं, बल्कि उनकी मां द्वारा स्थापित एक विरासत को आगे बढ़ाने की शुरुआत है। यह मां-बेटी की जोड़ी पाकिस्तानी क्रिकेट में महिला सशक्तिकरण और खेल के प्रति अदम्य जुनून का एक अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करती है, जहां दोनों ने अलग-अलग भूमिकाओं में खेल को अपना जीवन समर्पित किया है।

मेसी ने अर्जेटीना को कहा अलविदा, बोले- मुझे इसकी कमी खलेगी



ब्यूनस आयर्स **लियोनेल मेसी ने ब्यूनस आयर्स में बेनिन के खिलाफ 3-0 की जीत के साथ अर्जेटीना के लिए अपने अंतरराष्ट्रीय करियर का समापन किया।** **।** **दो गोल में सहयोग और एक पेनल्टी पर गोल करने के बाद मेसी ने खचाखच भरे एस्टाडियो मोनुमेंटल में भावुक भाषण दिया और अर्जेटीना की राष्ट्रीय टीम को अलविदा कहा।**

मेसी ने कहा कि वह अर्जेटीना के लिए खेलना याद करेंगे। उन्होंने अपने भाषण की शुरुआत अपने दिवंगत पिता जार्ज को याद करते हुए की, जिनका लंबा बीमारी के बाद अगस्त में निधन हो गया था। मेसी ने कहा, मैं जिस पहले व्यक्ति के बारे में सोचता हूं, वह मेरे पिता हैं। मैं आप सभी का सिर्फ धन्यवाद कर सकता हूं। 20 से

अधिक वर्षों तक इस जर्सी को रखा करना मेरे लिए बहुत बड़े गर्व की बात रही है। हमने कभी लड़ना बंद नहीं किया, कभी अपना सब कुछ देना बंद नहीं किया।

उन्होंने कहा, मेरी इच्छा है कि मैं पूरी जिंदगी खेल सकूं, क्योंकि अर्जेटीना के लिए खेलना सबसे खूबसूरत चीज है।

मेसी ने कहा, बेशक, मैं शायद बहुत सी ऐसे बातें भूल रहा हूं जो मैं कहना चाहता हूं। यह मेरे लिए एक मुश्किल पल है। मुझे इसकी कमी खलेगी।

39 वर्षीय मेसी ने यह भी कहा कि वह अर्जेटीना के लिए उनके बाद खेलने वाले खिलाड़ियों का समर्थन करते रहेंगे। उन्होंने कहा, जब हम एकजुट होते हैं, तो हम किसी भी अन्य टीम से ज्यादा मजबूत होते हैं। और हम किसी भी चीज से पार पा सकते हैं। मेसी ने अपने भावुक भाषण का समापन करते हुए कहा, मैं आपसे प्यार करता हूं, मैं आपसे प्यार करता हूं। मुझे आपको कमी खलेगी। और मैं अर्जेटीना का होने पर बेहद आभारी और गौरवान्वित हूं।

ओलंपिक मेजबानी के लिए भारत ने बढ़ाए कदम : फ्यूचर होस्ट कमीशन के सामने कब दिया जाएगा प्रेजेंटेशन सामने आया विजन

नई दिल्ली । **भारत के 2036 ओलंपिक खेलों की मेजबानी के दावे का विजन राइजिंग टूगेदर यानी एक साथ आगे बढ़ना होगा। इस महीने के अंत में अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के फ्यूचर होस्ट कमीशन के सामने पहला प्रेजेंटेशन दिया जाएगा। खेल मंत्री मनसुख मांडविया और भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) की अध्यक्ष पी. टी. उषा ने यह घोषणा की। भारत को प्रेजेंटेशन के लिए किया गया आमंत्रित**

आईओसी ने कहा था कि 2036 के ओलंपिक की मेजबानी में रुचि रखने वाले सात देशों में भारत, जर्मनी, कतर और तुर्किये शामिल हैं। इन्हें अगले महीने आईओसी के फ्यूचर होस्ट कमीशन के सामने अपनी खेल परियोजनाओं को प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया है। खेल मंत्री मनसुख मांडविया ने कहा, 2036 के लिए भारत की महत्वाकांक्षा एक साधारण विचार पर आधारित है। खेल हमारे देश के भविष्य को आकार देने में मदद कर सकते हैं। ओलंपिक और पैरालंपिक खेलों की मेजबानी से लाखों



युवा भारतीयों को खेल में भाग लेने की प्रेरणा मिलेगी। शिक्षा, रोजगार एवं सामाजिक विकास के क्षेत्र में हमारे युवाओं के लिए नए अवसर पैदा होंगे।

भारत ने किस शहर को मेजबानी के लिए चुना

इस मेगा इवेंट की मेजबानी के लिए भारत के पसंदीदा शहर के रूप में अहमदाबाद को चुना गया है और अगर ओलंपिक की मेजबानी मिलती है तो देश में इस तरह का यह पहला आयोजन होगा। भारत ने खेलों की मेजबानी के लिए अपनी इच्छा व्यक्त की थी, जिसके बाद 2024 में औपचारिक रूप से अपनी अर्जी सौंपी थी। आईओए अध्यक्ष पी. टी. उषा ने कहा कि भारत की आकांक्षाओं को आईओसी द्वारा मान्यता दिए जाने से संघ सम्मानित महसूस कर रहा है।

पी.टी. उषा बोलीं- ग्यूप का हिस्सा बनकर गर्व हो रहा है

पी.टी. उषा ने कहा, भविष्य के संस्करणों के लिए संभावित मेजबानों के एक असाधारण समूह का हिस्सा बनकर गर्व महसूस हो रहा है। हमारे लिए राइजिंग टूगेदर सिर्फ एक नारा नहीं है, यह भारत की ऊर्जा, महत्वाकांक्षा और विविधता को एक साझा ओलंपिक सपने के पीछे एकजुट करने की एक शक्तिशाली प्रतिबद्धता है। जैसे-जैसे हम 2036 के लिए अपने विजन को आगे बढ़ा रहे हैं, हम ऐसे खेल आयोजित करना चाहते हैं जो एक युवा, गतिशील और उभरते हुए भारत के आत्मविश्वास को दर्शाते हों। इसके साथ ही दुनिया भर की नई पीढ़ियों, नए समुदायों और नए क्षितिज तक पहुंचने की ओलंपिक एवं पैरालंपिक आंदोलनों की महत्वाकांक्षा

में योगदान दें। हम आईओसी के साथ अपने संवाद को जारी रखने और इस महीने के अंत में पहली बार फ्यूचर होस्ट कमीशन के सामने अपनी महत्वाकांक्षा को प्रस्तुत करने के लिए उत्सुक हैं।

आईओसी के अनुसार, मेजबानी का मूल्यंकन कई तकनीकी कारकों पर किया जाएगा, जिसमें वेन्यू मास्टर-प्लान और एथलीटों का अनुभव, फंडिंग रणनीति, राजनीतिक और सार्वजनिक समर्थन, खेल वितरण क्षमताएं और मेजबान समुदायों के लिए दीर्घकालिक लाभ पैदा करने वाली लिंगेसी रणनीति शामिल हैं। नवंबर की प्रस्तुतियों के बाद का अगला चरण टारगेटेड डायलाग की बजाय स्ट्रैटेजिक डायलाग होगा, जो संशोधित मेजबान चयन प्रक्रिया में भी निर्णय लेने की अंतिम प्रक्रिया बना रहेगा। अंतिम चरण की शुरुआत 2028 में होगी।

इंटर स्कूल क्रिकेट में डीपीएस नीलबड़ और डीपीएस कोलार की जीत



रबजीत सिंह ने 54, प्रयांश रॉयल ने 24 और युवराज राठौरवंशी ने 25 रन बनाए। शानदार प्रदर्शन के लिए रबजीत सिंह को मैन ऑफ द मैच चुना गया।

दूसरे मुकाबले में डीपीएस कोलार ने कैप्टियन स्कूल को 86 रन से पराजित किया। डीपीएस कोलार ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 25 ओवर में 7 विकेट पर 177 रन बनाए। रिवय माहेश्वरी ने 65 और आरोन शर्मा ने 26 रन बनाए।

लक्ष्य का पीछा करते हुए कैप्टियन स्कूल की टीम 25 ओवर में 91 रन पर सिमट गई। डीपीएस कोलार की ओर से आयुष्मान ने 4, अमन ने 3 और अशुमान ने 2 विकेट लिए। रिवय माहेश्वरी को उनके शानदार प्रदर्शन के लिए मैन ऑफ द मैच चुना गया।

भोपाल। डॉ. गोविंद नारायण सिंह ‘दाऊ साहेब’ इंटर स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता में बुधवार को खेले गए मुकाबलों में डीपीएस नीलबड़ और डीपीएस कोलार ने जीत दर्ज की।

ओल्ड चैंपियन मैदान पर पहले मुकाबले में डीपीएस नीलबड़ ने इंटरनेशनल स्कूल को 5 विकेट से हराया। इंटरनेशनल स्कूल ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 25 ओवर में 4 विकेट पर 127 रन बनाए। अमय जैन ने 73 रन की पारी खेली। डीपीएस नीलबड़ की ओर से अरनव शर्मा ने 3 विकेट लिए।

जवाब में डीपीएस नीलबड़ ने 19.3 ओवर में 5 विकेट खोकर 131 रन बनाकर मुकाबला जीत लिया।

मुम्बई भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज दिनेश कार्तिक ने कहा है कि अब भारतीय टीम में अनुभवी गेंदबाज मोहम्मद शमी की वापसी संभव नहीं है। कार्तिक के अनुसार टीम इंडिया अब शमी से आगे बढ़ गयी है। ऐसे में हमें युवा गेंदबाजों पर ही अपना भरोसा बनाये रखना चाहिये। शमी ने अपना पिछला अंतरराष्ट्रीय मुकाबला मार्च 2025 में खेला था। उसके बाद से ही वह टीम से बाहर चल रहे हैं। वह लगातार घरेलू क्रिकेट में अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं पर इसके बाद भी टीम में उनकी वापसी नहीं हो रही है जबकि कई क्रिकेट विशेषज्ञ और प्रशंसक उन्हें फिर से टीम में शामिल करने की मांग करते रहे हैं। इसी को लेकर कार्तिक ने कहा है कि अब मोहम्मद शमी को राष्ट्रीय टीम में वापस लाने का कोई मतलब नहीं है, क्योंकि भारतीय टीम उनसे आगे बढ़ चुकी है और अब दूसरे गेंदबाजों की तरफ देखना चाहिए। उन्होंने कहा कि चयनकर्ताओं को अब अन्य उभरते हुए तेज गेंदबाजों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। कार्तिक के शब्दों में, मुझे लगता है कि वहां और भी गेंदबाज हैं। भारत उनसे आगे बढ़ चुका है। वापस जाने का कोई मतलब नहीं है। मैं शमी की तरफ नहीं देख रहा हूं, भले ही उन्होंने शानदार गेंदबाजी की है। यह बयान शमी के प्रशंसकों के लिए निश्चित रूप से निराशाजनक हो सकता है, जो उनकी प्रभावशाली घरेलू फार्म को देखते हुए टीम में उनकी वापसी की उम्मीद कर रहे थे।

जहां एक ओर कार्तिक ने मोहम्मद शमी की वापसी को सिर से खारिज कर दिया, वहीं उन्होंने टीम के दो सबसे बड़े स्तंभों, विराट कोहली और रोहित शर्मा के भविष्य को लेकर बिल्कुल विपरीत राय रखी। कार्तिक का मानना ​​है कि इन दोनों दिग्गज खिलाड़ियों को खेलना जारी रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि कोहली और रोहित सिर्फ भारतीय टीम के लिए ही नहीं, बल्कि विश्व क्रिकेट के लिए भी बेहद महत्वपूर्ण हैं। उनके अनुसार, हां, वो दो सबसे बड़े नाम हैं और भारत वर्ल्ड क्रिकेट का केंद्र है, इसलिए अगर हम दो बेहतरीन क्रिकेटरों को खो देते हैं, तो इसका असर जरूर पड़ेगा। यह दर्शाता है कि कार्तिक अनुभवी बल्लेबाजों के महत्व को स्वीकार करते हैं, जबकि गेंदबाजी विभाग में नए चेहरों को मौका देने की वकालत कर रहे हैं।

इसके बाद दूसरे वनडे में उन्होंने 29 रन बनाए थे, हालांकि तीसरे मुकाबले में वह बिना खाता खोले आउट हो गए थे, लेकिन उनकी ओवरआल फार्म सराहनीय रही है। इसी तरह, टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने भी वेस्टइंडीज वनडे सीरीज में बल्ले से कमाल दिखाया था। हिटमैन के लिए यह सीरीज बेहद शानदार रही, जहां उन्होंने एक शतक और एक अर्धशतक की मदद से तीन मैचों में क्रमशः 32, 101 और 92 रन बनाए थे। उनकी कप्तानी और बल्लेबाजी दोनों ने टीम को मजबूती प्रदान की। कुल मिलाकर, दिनेश कार्तिक के इस बयान ने भारतीय क्रिकेट में एक नई बहस छेड़ दी है, जहां एक ओर मोहम्मद शमी जैसे अनुभवी गेंदबाज के भविष्य पर सवालिया निशान लगा है, वहीं विराट कोहली और रोहित शर्मा जैसे दिग्गजों की अहमियत को फिर से रेखांकित किया गया है।

2027 एकदिवसीय विश्वकप के लिए भारत-पाकिस्तान के एक ही ग्रुप में होने से रोमांच बढ़ा

मुम्बई अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने 2027 एकदिवसीय विश्वकप में भारत और पाकिस्तान को एक ही ग्रुप ए में रखा गया है, जिसने टूर्नामेंट के रोमांच को और बढ़ा दिया है। विश्वकप कप दक्षिण अफ्रीका, जिम्बाब्वे और नामीबिया की संयुक्त मेजबानी में 2 अक्टूबर से 21 नवंबर तक खेला जाएगा। इसमें कुल 14 टीमों हिस्सा लेंगी, जो 12 मैदानों पर 57 मुकाबले खेलेंगी।

ये टूर्नामेंट तीन चरणों में आयोजित होगा। कुल 10 टीमों को सीधे ग्रुप स्टेज में जगह मिली है, जिनमें भारत और पाकिस्तान भी शामिल हैं। शेष दो स्थानों के लिए तीन टीमों के बीच एक सुपर-सीरीज खेली जाएगी, जिनमें से केवल दो टीमों ही अंतिम 12 में अपनी जगह पक्की कर पाएंगी।

ग्रुप ए को निस्संदेह सबसे चुनौतीपूर्ण माना जा रहा है, जिसमें क्रिकेट जगत की कुछ सबसे बड़ी टीमों शामिल हैं: भारत, आस्ट्रेलिया, पाकिस्तान,



अफगानिस्तान और मेजबान जिम्बाब्वे। यह ग्रुप इसलिए भी खास है क्योंकि इसमें तीन पूर्व विश्व चैंपियन छह बार की विजेता आस्ट्रेलिया, दो बार की विजेता भारत और एक बार का विजेता

भारत को 6 विकेट से हराया था। वहीं प्रशंसकों फैंस को सबसे ज्यादा जिस मैच का इंतजार है, वह भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाला मुकाबला है। एकदिवसीय विश्व इतिहास में पाकिस्तान कभी भारत को नहीं हरा पाया है, फिर भी दोनों टीमों के बीच होने वाला यह मुकाबला हमेशा अप्रत्याशित उत्साह से भरा होता है।

यह बहुप्रतीक्षित भिड़ंत 10 अक्टूबर को जोहान्सबर्ग के ऐतिहासिक वांडरर्स स्टेडियम में होगी। भारत के शुरुआती मैचों का शेड्यूल इस प्रकार है: 7 अक्टूबर को आस्ट्रेलिया से, 10 अक्टूबर को पाकिस्तान से, 14 अक्टूबर को अफगानिस्तान से, 17 अक्टूबर को क्वालीफायर ए से और 24 अक्टूबर को जिम्बाब्वे से मुकाबला।

दूसरी ओर, ग्रुप बी में भी मजबूत टीम हैं, जिनमें इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका, श्रीलंका, न्यूजीलैंड और बांग्लादेश शामिल हैं। इस ग्रुप में भी एक क्वालीफायर टीम जुड़ेगी। ग्रुप बी में दो

पूर्व विश्व चैंपियन हैं - एक बार के विजेता इंग्लैंड और एक बार के विजेता श्रीलंका। न्यूजीलैंड की टीम पिछले तीन में से दो वर्ल्ड कप फाइनल खेलकर अपनी निरंतरता साबित कर चुकी है, वहीं बांग्लादेश ने हाल के वर्षों में आस्ट्रेलिया और पाकिस्तान जैसी बड़ी टीमों को हराकर अपने खेल का स्तर काफी ऊंचा उठाया है।

अब सवाल यह उठता है कि कौन सा ग्रुप ज्यादा कठिन है अगर हम मौजूदा रैंकिंग पर गौर करें, तो शीर्ष-5 टीमों में से तीन (भारत, आस्ट्रेलिया और पाकिस्तान) ग्रुप ए में हैं। यह स्पष्ट रूप से ग्रुप ए को कागज पर अधिक कठिन बनाता है। हालांकि, क्रिकेट में रैंकिंग ही सब कुछ नहीं होती। मौजूदा फार्म और टीमों की तैयारी के आधार पर भी ग्रुप ए ही ज्यादा कड़ा मुकाबला पेश करता दिख रहा है, जहां हर मैच एक बड़ी चुनौती साबित हो सकता है। यह देखना दिलचस्प होगा कि कौन सी टीमें इन चुनौतियों से पार पाकर नाकआउट स्टेज में जगह बनाती हैं।